

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

निम्न शक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।



1. विषय कोड **001** परीक्षा का विषय **हिन्दी विशिष्ट**

2. परीक्षा का माध्यम **हिन्दी** परीक्षा की दिनांक **5-03-09**

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर कोड सेट
(सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें **T-1001-D**

परीक्षा के नाम की सील

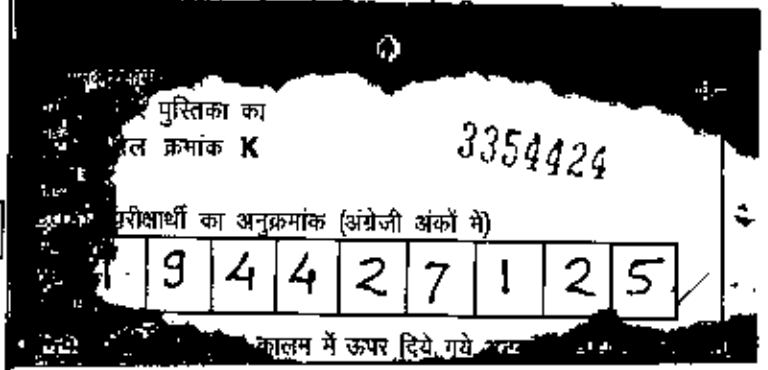
हाईस्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा

केन्द्र क्रमांक की सील
442056

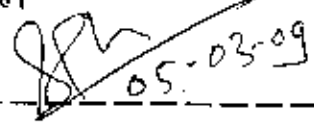
पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में अंकों में
ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्षा क्रमांक **13** में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।



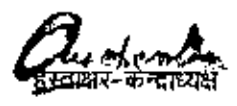
B
S
E
M
P

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक)  05-03-09

नाम **S.S. Tyagi** पद **Asst. Teacher**

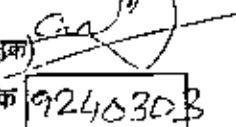
पता/संस्था **भारत कॉमर्सि उ.मा.वि**

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।


हस्ताक्षर-केन्द्राध्यक्ष

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिका चस्था स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कवर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान

हस्ताक्षर (परीक्षक)  हस्ताक्षर (उपमुख्य प
परीक्षक क्रमांक **9240303** दिनांक **16-3-09**

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न-पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :-

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ
3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कच्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3



+

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ संकलक

दृश्य



प्रश्न 1.

(i) मलिक मोहम्मद जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' महाकाव्य है।

(ii) स्वामी रामतीर्थ जापान गए थे।

(iii) शब्द चिकित्सा के प्रवर्तक सुश्रुत हैं।

(iv) 'मधुप की मधुर गुनगुन' से भौरी का मधुर गान से आशय है।

(v) पुस्तकालय का संधि विच्छेद पुस्तक + आलय है।

प्रश्न 2.

(i) मीठे फल का आनन्द लेने वाला कौन है?

उत्तर → गूंगा।

(ii) 'पहली चूक' पाठ लेखक ने किस शैली में लिखा है?

उत्तर → व्यंग्यात्मक शैली।

(iii) हवा से तेज चलने वाला कौन है?

उत्तर → मन।

(iv) खेती करने वाला कहलता है -

उत्तर → कृषक।

(v) जिसके प्रत्येक चरण में 14 और 12 की यति पर 26 मात्राएँ होती हैं अन्त में लघु गुरु होता है उसे कहते हैं

उत्तर → मीतिका।

B
S
E
M
P



प्रश्न 3

- (i) नर्मदा का उद्गम स्थल डमरंकटक है। सत्य ✓
- (ii) 'जगदीश' शब्द में विसर्ग संधि है। असत्य ✓
- (iii) 'बादल को धिरे देखा है' नामक कविता के कवि तुलसीदास हैं। असत्य ✓
- (iv) 'शान्त रस' का स्थायी भाव 'निर्वेद' है। सत्य ✓
- (v) भूँ मनुष्य की भूख एवं शारीरिक आवश्यकता का प्रतीक है। सत्य ✓

प्रश्न 4

- (i) भगिनी निवेदिता मार्गिट एमिजाबेथनेब्ल ✓
- (ii) कोयल मधुर स्वर ✓
- (iii) सोलह कला का अवतार श्रीकृष्ण ✓
- (iv) प्रस्तुत के माध्यम से अप्रस्तुत का अन्योक्ति अलंकार ✓
- (v) अर्थ ध्वनि हो
- (vi) देशभक्ति तत्पुरुष समास ✓

प्रश्न 5

(i) जिस समास में कोई पद प्रधान न होकर किसी अन्य अर्थ का बोध कराता है उस समास का नाम लिखिए।

उत्तर - बहुव्रीहि समास ✓

(ii) आयुष्य की बाह्य शारीरिक चेष्टाओं को क्या कहते हैं?

5

पृष्ठ संख्या

पृष्ठ संख्या

कुल अंक



उत्तर → अनुभाव । ✓

(iii) श्रावण की पूर्णिमा को कौन सा पर्व मनाया जाता है?

उत्तर → रक्षाबन्धन । ✓

(iv) गांधीजी द्वारा स्थापित आश्रम का नाम लिखिए ।

उत्तर → सेवाग्राम । ✓

(v) बिना विचारे कार्य करने से क्या होता है?

उत्तर → बिना विचारे कार्य करने से बाद में पछताना पड़ता है, काम बिगड़ जाता है तथा जगहें सार्ई होती हैं ।

B
S
E
M
P

प्रश्न 6 श्रीहरिवंशराय बच्चन कवि चलने के पूर्व बटोही को निम्नलिखित बातों के लिए आगाह कर रहे हैं :-

1. कवि चलने के पूर्व पथिक को रास्ते की पहचान करने को कह रहा है ।
2. वह आगाह कर रहा है इस रास्ते से संति संबंधित बातें किसी किताब में नहीं मिलेंगी और न ही उन्हें कोई बताएगा ।
3. रास्ते में अनेक विघ्न बाधाएँ आएंगी जिन्से संघर्ष करना होगा ।
4. कवि आगाह कर रहा है कि इन विघ्नों का पता पथिक को स्वयं ही यात्रा के दौरान चलेगा ।



प्रश्न 7 कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान वीरों के लिए इस प्रकार के बसंत का आयोजन करना चाहती हैं जिसमें एक तरफ तो कोकिला तान भर रही हो और दूसरी तरफ माऊ बाजा बज रहा हो। इस प्रकार रंग और रंग का वातावरण बन रहा हो। वीर इन रंगिनीयों को छोड़कर युद्ध के लिए तैयार हो जाते हैं बसन्त की रंगिनीयों इन वीरों को रोकती नहीं हैं।

प्रश्न 8 छायावाद की 2 विशेषताएँ :-

1. प्रकृति का मानवीकरण :- छायावाद में कवियों ने प्रकृति का मानवीकरण कर दिया है। सम्पूर्ण प्रकृति एक सुंदर नायिका के रूप में लग रही है।

2. अज्ञात सत्ता के प्रति प्रेम :- छायावाद में कवियों में अज्ञात सत्ता के प्रति प्रेम तथा जिज्ञासा की भावना दिखाई देती है। सम्पूर्ण मानव अगत मानव चेतना से स्पष्टित दिखाई देता है।

छायावादी कवि

रचनाएँ

1. अयशंकर प्रसाद

कामायनी, इक्ष्वा

2. सुमित्रानन्दन पंत

पल्लव, वीणा।



प्रश्न-9 आत्मकथा व जीवनी में अन्तर

आत्मकथा	जीवनी
1. आत्मकथा में लेखक स्वयं के जीवन में घटित घटनाओं एवं अनुभवों को प्रस्तुत करता है।	1. जीवनी में लेखक किसी अन्य प्रसिद्ध व्यक्ति के जीवन में घटित घटनाओं पर अपनी कल्पना शक्ति के माध्यम से प्रकाश डालता है।
2. आत्मकथा कथात्मक शैली में लिखी जाती है।	2. जबकि जीवनी वर्णनात्मक शैली में लिखी जाती है।

B
S
E
M
P

1. आत्मकथा - रचनाकार
मेरी असफलताएँ - गुलाबराय

जीवनी - रचनाकार
कलम का सिपाही - अमृतराज

प्रश्न-10 परम्परा तथा आधुनिकता की व्याख्या इस प्रकार है :-

परम्परा	आधुनिकता
1. खड़ा पैर परम्परा है।	1. चलता पैर आधुनिकता है।
2. परम्परा यात्रा में पीछा छोटा अंतिम कदम है।	2. आधुनिकता यात्रा में आगे बढ़ा हुआ गतिशील कदम है।
3. परम्परा एक से दूसरे को तथा दूसरे से तीसरे को दिया जाने वाला क्रम है।	3. 'अधुना' अथवा 'इस वक्त' जो कुछ भी है वह आधुनिक है।

4. मनुष्य ने जिन महनीय मूर्तियों को प्राप्त किया वे अब परम्परा कहलाते हैं और ये मनुष्य के प्रयोजनों द्वारा कट-छंट कर आधुनिकता बनाते हैं।

अतः परम्परा और आधुनिकता की तुलनात्मक व्याख्या करने पर यह ज्ञात होता है कि ये दोनों परस्पर विरोधी नहीं बल्कि एक दूसरे के पूरक हैं।

प्रश्न 11. लेखक श्री हरिशंकर परसाई ने निंदकों को पास में रखने की सलाह दी है क्योंकि वे बिना पानी बिना साबुन के ही हमारे स्वभाव को निर्मल कर देते हैं। उनके पास रहने से हम कोई गलत कार्य भी नहीं करते हैं। ये निंदक साध ही साथ हमारे दोषों का उद्घाटन समय-समय पर करते रहते हैं। इनमें एकाग्रता, निमग्नता आदि गुण घायल जाते हैं। कहा भी गया है —
निंदक निअरे राखिए, आँगन कुटी छुवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय॥

प्रश्न 12. (अ) महाकाव्य की परिभाषा :- महाकाव्य एक सर्गबद्ध रचना होती है जिसमें किसी युग का सांगोपांग



चित्रण किया जाता है, घट वृद्ध होता है तथा इसमें कम से कम 8 सर्ग होते हैं।

दो महाकाव्य

रचनाकार

1. रामचरितमानस

— गोस्वामी तुलसीदास

2. कामायनी

— जयशंकर प्रसाद

(ब) हे सारथे! — — — — — कर लें।
उपर्युक्त पंक्तियों में वीर रस है। इसका स्थायी भाव उत्साह है।

प्रश्न 13 (अ)

(ख) मोहित फूल खाता है। (प्रश्नवाचक)

क्या मोहित फूल खाता है?

(क) माता पिता की सेवा करना चाहिए। (आज्ञावाचक)

माता पिता की सेवा करो।

(ब) (क) उत्तर → असूचितक वाक्य

(ख) उत्तर → निषेधात्मक वाक्य

(स) (क) उत्तर → दीर्घयु

(ख) उत्तर → वाचाल

प्रश्न 14

(क) दो रचनाएँ

(ख) भाषा शैली

(ग) साहित्य में स्थान



वासुदेवशरण अग्रवाल
(क) दो रचनाएँ → 1. पृथ्वी पुत्र
2. कल्पवृक्ष ।

(ख) भाषा शैली →

भाषा → वासुदेवशरण अग्रवाल की भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है।
मुलावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग हुआ है। भाषा सहज सरल बोधगम्य है परन्तु कहीं कहीं दुरुहता आ गई है। संस्कृत के शब्दों का प्रयोग बहुतायत में मिलता है।

शैली →

1. गणवेशात्मक शैली :- अतीत के चित्रों, पुरातत्व की वस्तुओं आदि के वर्णन में इन्होंने गणवेशात्मक शैली का प्रयोग किया है।

2. उद्गुरण शैली :- लेखक वासुदेवशरण अग्रवाल जो कुछ करते हैं उन्हें विविध आध्यात्मों से सुषुप्त पुरुष करने हैं। इसीलिए इन्होंने उद्गुरण शैली का प्रयोग बहुतायत में किया है।
माता भूमिपुत्र, पुत्रोऽहं पृथिव्याः ।

3. भावात्मक शैली :- लेखक जहाँ भावुक हो जाते हैं वहाँ उनकी यह शैली

बिखर जाती है। लेखक ने अपने हृदय पक्ष का वर्णन बड़े ही मनोहारी रूप में किया है।

(ग) साहित्य में स्थान :- अग्रवाल का हिन्दी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान है। इनके अतीत के लेख तथा पुरातन से संबंधित लेख बहुत रोचक होते हैं।

प्रश्न 15

सूरदास

(क) दो रचनाएँ :-
1. सूरसागर
2. सूर सारावली ।

(ख) भावपक्ष एवं कलापक्ष →

भावपक्ष → वात्सल्य वर्णन :- सूरदास ने

वात्सल्य रस

के दोनों पक्षों विरह और संयोग का मनोहारी चित्रण किया है।

2. शृंगार वर्णन :- सूरदासजी को शृंगार वर्णन सिद्ध हैं उन्होंने इसके भी दोनों

पक्षों का वर्णन किया है।

3. भक्ति भावना :- सूरदास कृष्ण के भक्त थे।

उनका श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य

भाव था। वे भक्ति को ही एक एकमात्र मुक्ति का साधन मानते थे।

कलापक्ष → भाषा → सूरदास की भाषा

साहित्यिक ब्रज भाषा है।

2. शैली :- सूरदास ने मुक्तक काव्य को अपनाया था और उनकी शैली गेय चंद शैली थी।



3. अलंकार :- सुरदास ने उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकार का उपयोग किया है।

साहित्य में स्थान :- सुरदास भक्तिकाल के अन्तर्गत समुग्न भक्तिधारा के प्रमुख कवि थे। इन्हें वात्सल्य रस का सम्राट कहा जाता है। कहा भी गया है :-

‘सूर-सूर, तुलसी ससि’।

प्रश्न 16 →

संकेत :- नीकी लसत में आयी।

संदर्भ :- प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक ‘मवनीत’ के प्रेम और सौन्दर्य नामक पाठ के अन्तर्गत प्रेम माधुरी नामक पाठ से लिया गया है। इसके कवि रीतिकाल के प्रमुख कवि बिहारी हैं।

प्रसंग :- प्रस्तुत दोहे में श्रीकृष्ण के मुख के सौन्दर्य का वर्णन किया गया है।

व्याख्या :- कविवर बिहारी कहते हैं कि श्रीकृष्ण के बलाट पर लगा हुआ टीका अत्यंत सुंदर लग रहा है। यह टीका उनके मुख को सुशोभित कर रहा है। कवि कल्पना करते हैं कि श्रीकृष्ण का मुख चन्द्रमण्डल है तथा यह टीका सूर्य है।



यह टीका उनके मुखमण्डल की शोभा उसी प्रकार बढ़ा रहा है जिस प्रकार चन्द्रमण्डल में रवि (सूर्य) प्रवेश कर पूरे चन्द्रमण्डल की शोभा बढ़ा देता है।

विशेष :- 'अरत अराय' तथा 'लसत लिलार' में अनुप्रास अलंकार बिखरा है।

2. उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग किया गया है।

प्रश्न 17.

संकेत :- कृष्ण की असम्भव है।

संदर्भ :- प्रस्तुत अध्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'नवनीत' के 'महापुरुष श्रीकृष्ण' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक श्री वासुदेवशरण अग्रवाल हैं।

प्रसंग :- प्रस्तुत अध्यांश में कृष्ण के युद्ध कौशल का महत्त्व अर्जुन, विष्णुगुप्त चाणक्य तथा द्यूतराष्ट्र स्वयं बता रहे हैं।

व्याख्या :- लेखक श्री वासुदेवशरण अग्रवाल लिखते हैं कि कृष्ण, राजनीति में पारंगत थे। अर्जुन ने एक तरफ कृष्ण की पूरी सेना तथा दूसरी ओर अकेले कृष्ण के होने पर कृष्ण को भाँगा था क्योंकि उनका मानना था कि कृष्ण जिसके साथ होंगे विजय उसी को प्राप्त होगी। उसी प्रकार आर्य विष्णुगुप्त चाणक्य ने भी कृष्ण



की राजनीतिक बुद्धि पर पूर्ण विश्वास था। उनका मानना था कि जहाँ कोई भी उपाय काम न कर रहा हो वहाँ कृष्ण ही एकमात्र सहारा होते हैं।

शत्रु द्यूतराष्ट्र को भी यही मानना था कि जब तक अर्जुन, कृष्ण व अचिज्य गाँडीव धनुष एक साथ हैं तब तक कौरवों की ग्यारह अक्षौहिणी सेना तथा पाण्डवों की केवल सात अक्षौहिणी सेना होने के बावजूद भी पाण्डवों की ही विजय होगी तथा कौरवों की पराजय निश्चित है।

प्रश्न 18 →

(क) गद्यांश का सारांश :- प्रस्तुत गद्यांश में समय के सदुपयोग के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है। समय के सदुपयोग से हम अधिक कार्य करके सच्चे अर्थों में मनुष्य बनते हैं। संसार में महापुरुष भी समय के महत्त्व को जानकर ही महापुरुष बने हैं।

(ख) 'समय का सदुपयोग' उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक है।

(ग) समय का सदुपयोग करके अधिक कार्य करते हुए निरन्तर ऊँचे उठते हुए हम जीवन को सार्थक बना सकते हैं।



प्रश्न-19, अपन प्राचार्य को बुक बैंक से कक्षा दसवीं की समस्त पुस्तकें प्राप्त करने हेतु आवेदन पत्र लिखिए। सेवा में,

श्रीयुक्त प्राचार्य महोदय,
आदित्य बिरहा उन्मा. वि.,
बिरहाग्राम, नागदा जिला- उज्जैन (म.प्र.)।

विषय:- बुक-बैंक से पुस्तकें प्राप्त करने विषयक।
महोदय,

सविनय निवेदन है कि मेरे पिताजी एक निर्धन कृषक हैं तथा मेरे घर की आर्थिक स्थिति कमज़ोर है। इसीलिए मैं अपनी पुस्तकें बाज़ार से खरीकने में असमर्थ हूँ। मैं पिछले वर्ष प्रथम खेती में उत्तीर्ण हुआ था।

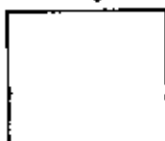
अतः कृपया आप मुझे निम्नलिखित ^{समस्त} पुस्तकें बुक-बैंक से उपलब्ध करवाने की कृपा करें। मैं ये समस्त पुस्तकें सत्र के अन्त में पुनः जमा करवा दूँगा।

हिन्दी (विशिष्ट)	कक्षा-10
अंग्रेजी (सामान्य)	कक्षा-10
संस्कृत (सामान्य)	कक्षा-10
सा. विज्ञान	कक्षा-10
विज्ञान	कक्षा-10
शांति	कक्षा-10

धन्यवाद

दिनांक 3-3-03

आपका- आशाकारी छात्र
अबसे
कक्षा - 10 वीं



पृष्ठ के अंकों का योग



प्रश्न 20

निबंध

कम्प्यूटर और इसका महत्व
निबंध का अर्थ है 'झली प्रकार से बँधी हुई रचना'। निबंध में लेखक के दृष्टिकोण का प्रतिपादन होता है। यह शब्द रचना के रूप में लिखा जाता है।

रूपरेखा :- 1. प्रस्तावना

2. कम्प्यूटर का आविष्कार और विकास

3. कम्प्यूटर का महत्व

4. कम्प्यूटर क्या है ?

5. उपसंहार

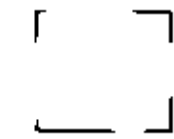
प्रस्तावना :- आवश्यकता आविष्कार की प्रवृत्ति है। मनुष्य की आवश्यकताओं ने कई आविष्कार किए हैं। जब मनुष्य को गणनाएँ, प्रमाण आदि में परेशानियाँ होने लगीं तब मनुष्य ने कम्प्यूटर का आविष्कार किया। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कम्प्यूटर का महत्व बढ़ता जा रहा है।

कम्प्यूटर का आविष्कार व विकास :- सन् 1000 में

जापान में एक एबेकस नामक वस्तु का विकास ^{किया} गया जिसका उपयोग गणनाएँ करने के लिए किया जाता था।

सन् 1643 में एक फ्रांसीसी नवयुवक ने एक ऐसी वस्तु का आविष्कार किया जो बड़ी ^{घटनाओं} गणनाओं

17



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 17 के अंक

=



कुल अंक



को मिन्टों में हल कर देती थी। इसमें दो पहिए लगे हुए थे। इसे कम्प्यूटर नाम दिया गया।

परन्तु सन् 1868 में इंग्लैंड के गणितज्ञ ने आधुनिक कम्प्यूटर का आविष्कार किया। यह गणितियों गणनाओं, प्रसारण आदि के लिए उपयुक्त था। कम्प्यूटर के महत्व को देखते हुए सन् 1965 में भारत में भी कम्प्यूटर लया गया।

B
S
E
M
P

कम्प्यूटर क्या है :- कम्प्यूटर एक यांत्रिक मस्तिष्क है जिसमें पहले से आवश्यक उपकरण तथा उदा. डाल दिए जाते हैं। कम्प्यूटर गणनाओं को शीघ्र ही हल कर नेत्रपरल के सामने प्रस्तुत कर देता है।

कम्प्यूटर का महत्व :-

1. गणना के क्षेत्र में :- कम्प्यूटर की सहायता से बड़ी-बड़ी गणितीय गणनाएँ कुछ ही सेकण्ड्स में निकाल ली जाती हैं। गणना करने के लिए इसका महत्व सर्वाधिक है।

2. शिक्षा के क्षेत्र में :- शिक्षा को गुणवत्ता युक्त बनाने में कम्प्यूटर का महत्वपूर्ण योगदान है। आज कम्प्यूटर शिक्षा को शिक्षा पाठ्यक्रम



पृष्ठ के अंकों का योग



में भी शामिल कर लिया गया है।

3. आरक्षण के क्षेत्र में :- कम्प्यूटर की सहायता से पर बैठे ही रेलों, वायुयानों या फिर किसी अन्य प्रकार के आरक्षण आसानी से प्राप्त किए जा सकते हैं।

4. बैंकिंग :- बैंकिंग क्षेत्र में कम्प्यूटर ने क्रांति ला दी है। वित्त संबंधी सभी समस्याओं को कम्प्यूटर द्वारा सुलझाया जाता है। इसकी मे मेमोरी बहुत अधिक होती है इसीलिए इसमें बड़ी से बड़ी आँकड़ों को संग्रहित कर लिए जाता है।

5. प्रसारण :- कम्प्यूटर में इन्टरनेट प्रणाली होती है। इसके द्वारा सूचनाओं का आदान-प्रदान तथा प्रसारण आसानी से किया जाता है।

6. प्रकाशन :- कम्प्यूटर का उपयोग सूचनाओं से संबंधित आँकड़ों के प्रकाशन के लिए किया जाता है।

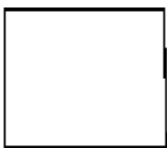
7. वैज्ञानिक अंतरिक्ष खोज :- वैज्ञानिक अंतरिक्ष खोजों के क्षेत्र में कम्प्यूटर का विशेष महत्त्व है। अंतरिक्ष में जो



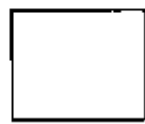
भी कुछ भेजा जाता है उसका संचालन पृथ्वी पर से
कम्प्यूटर द्वारा ही किया जाता है।

उपसंहर :- आज कम्प्यूटर ने जहाँ जीवन के अत्येक
प्रत्येक क्षेत्र में क्रांति लायी है वहीं जीवन को
पंगु भी बना दिया है इसीलिए हमें कम्प्यूटर का उपयोग
सावधानीपूर्वक करना चाहिए। कम्प्यूटर ^{सीखना} वर्तमान युग की
आवश्यकता है। अब वह दिन दूर नहीं जब प्रत्येक
यक्ति के पास कम्प्यूटर होगा।

B
S
E
M
P



20



+



=

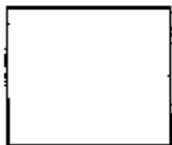


योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 20 के अंक

कुल अंक

B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग

21

+

=

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 21 के अंक

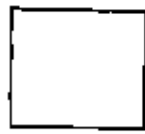
कुल अंक



B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

22



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 22 के अंक

कुल अंक

B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग

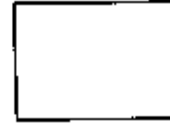
23



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 23 के अंक

कुल अंक

B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग

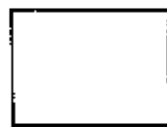
24



+



=



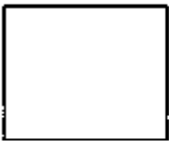
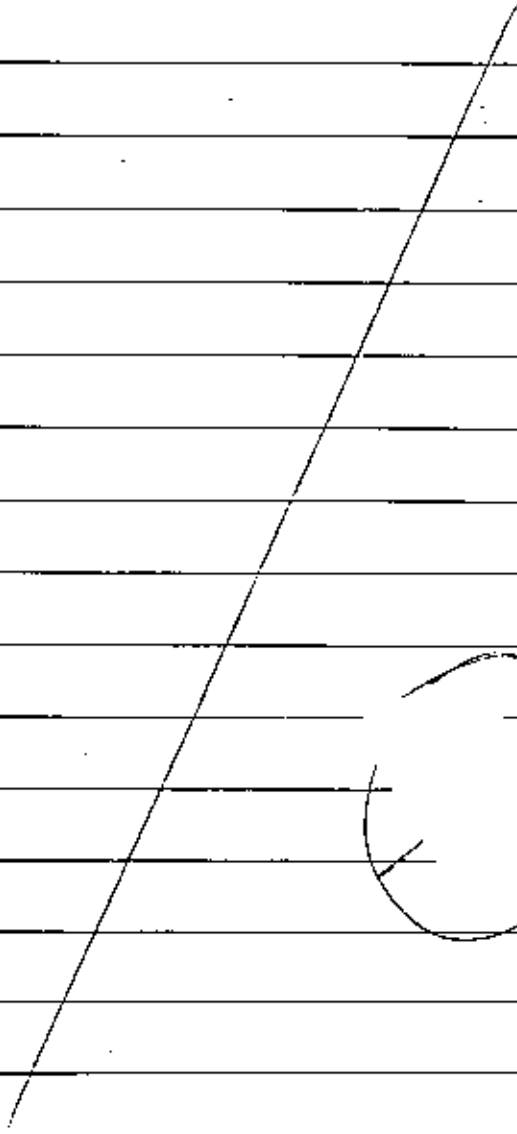
योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 24 के अंक

कुल अंक



B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग